

BG Ch 5 - Karm Sanyas Yog.

Chapter 5 of the Bhagavad Gita, "Karma Sanyas Yog" or "The Yog of Renunciation," compares two spiritual paths: Karma Yoga (the Yoga of Action) and Sannyasa (the Renunciation of Action). Arjuna is confused about which path to choose for attaining liberation.

That is when Shri Krishna explains the importance of both the paths & how it leads to the same goal: liberation (moksha). However, Karma Yog is more practical for many, as it involves performing one's duties without attachment to the results. True renunciation is about abandoning attachment, not actions. A person who performs their duties selflessly and with equanimity in success and failure is considered a true renunciate.

The chapter emphasises on maintaining mental peace and equanimity. Liberation is achieved by understanding the self as distinct from the body and material world, realising the eternal and unchanging nature of the self, and becoming free from desires and the sense of ownership.

Krishna advises Arjuna that Karma Yoga is more suitable for him, enabling him to achieve spiritual goals without renouncing worldly responsibilities. The teachings highlight that spiritual progress can be attained through selfless action and a balanced mind, making it applicable to everyday life.

अध्याय 5 को कर्म संन्यास योग के नाम से जाना जाता है।

भगवद गीता का अध्याय 5, "कर्म संन्यास योग" या "त्याग का योग", दो आध्यात्मिक मार्गों की तुलना करता है: कर्म योग (कार्य का योग) और संन्यास (कार्य का त्याग)। अर्जुन इस बात को लेकर असमंजस में है कि मुक्ति पाने के लिए कौन सा मार्ग चुना जाए।

तभी श्री कृष्ण दोनों मार्गों के महत्व और यह कैसे एक ही लक्ष्य की ओर ले जाता है: मुक्ति (मोक्ष) की व्याख्या करते हैं। हालाँकि, कर्म योग कई लोगों के लिए अधिक व्यावहारिक है, क्योंकि इसमें परिणामों की आसक्ति के बिना अपने कर्तव्यों का पालन करना शामिल है। सच्चा त्याग आसक्ति को त्यागने के बारे में है, कर्मों के बारे में नहीं। जो व्यक्ति सफलता और असफलता में निस्वार्थ भाव से और समभाव से अपने कर्तव्यों का पालन करता है, उसे सच्चा त्यागी माना जाता है।

अध्याय मानसिक शांति और समभाव बनाए रखने पर जोर देता है। मुक्ति शरीर और भौतिक दुनिया से अलग स्वयं को समझने, स्वयं की शाश्वत और अपरिवर्तनीय प्रकृति को महसूस करने और इच्छाओं और स्वामित्व की भावना से मुक्त होने से प्राप्त होती है।

कृष्ण अर्जुन को सलाह देते हैं कि कर्म योग उसके लिए अधिक उपयुक्त है, जो उसे सांसारिक जिम्मेदारियों का त्याग किए बिना आध्यात्मिक लक्ष्य प्राप्त करने में सक्षम बनाता है। शिक्षाएँ इस बात पर प्रकाश डालती हैं कि निस्वार्थ कर्म और संतुलित मन के माध्यम से आध्यात्मिक प्रगति प्राप्त की जा सकती है, जो इसे रोज़मर्रा की ज़िंदगी में लागू करती है।

अर्जुन उवाच ।

संन्यासं कर्मणां कृष्ण पुनर्योगं च शंससि ।

यच्छ्रेय एतयोरेकं तन्मे ब्रूहि सुनिश्चितम् ॥ 1॥

Arjun asks Shri Krishna that on one side you talk about Karm Sanyas & on the other you are all praise for Karm Yog. Pls tell me what is good for me & what exactly should I do?

In life, whenever we have options, we choose the easiest one to reach to our goals. For that, one needs to ask, needs to understand & study all the options.

अर्जुन श्री कृष्ण से पूछते हैं कि एक तरफ तो आप कर्म संन्यास की बात करते हैं और दूसरी तरफ कर्म योग की प्रशंसा करते हैं। कृपया मुझे बताएं कि मेरे लिए क्या अच्छा है और मुझे वास्तव में क्या करना चाहिए?

जीवन में, जब भी हमारे पास विकल्प होते हैं, हम अपने लक्ष्य तक पहुंचने के लिए सबसे आसान विकल्प चुनते हैं। उसके लिए पूछने की जरूरत है, सभी विकल्पों को समझने और उनका अध्ययन करने की जरूरत है।

श्रीभगवानुवाच ।

संन्यासः कर्मयोगश्च निःश्रेयसकरावुभौ ।

तयोस्तु कर्मसंन्यासात्कर्मयोगो विशिष्यते ॥ 2॥

Shri Krishna says, both karm sanyas & karm yog, both are beneficial. But karm yog is comparatively easier. Both will help you reach your goal, but karm sanyas is a difficult path as there will be difficulties & challenges at every point of life. Whereas karm yog on the other side is easier. This we all can do all the time without much preparation. You just have to live your daily life with full determination, responsibility & righteousness.

श्री कृष्ण कहते हैं, कर्म संन्यास और कर्म योग दोनों ही लाभकारी हैं। लेकिन कर्म योग तुलनात्मक रूप से आसान है। दोनों ही आपको अपने लक्ष्य तक पहुंचने में मदद करेंगे, लेकिन कर्म संन्यास एक कठिन रास्ता है क्योंकि जीवन के हर मोड़ पर कठिनाइयाँ और चुनौतियाँ आएंगी।

जबकि दूसरी तरफ कर्म योग आसान है। यह हम सभी बिना अधिक तैयारी के हर समय कर सकते हैं। आपको बस अपना दैनिक जीवन पूरी दृढ़ता, जिम्मेदारी और धार्मिकता के साथ जीना है।

ज्ञेयः स नित्यसंन्यासी यो न द्वेष्टि न काङ्क्षति ।

निर्व्वन्द्वो हि महाबाहो सुखं बन्धात्प्रमुच्यते ॥ 3॥

The one who doesn't feel jealous of anyone or who does not have any desire or lust, such a karm yogi should be considered as sanyasi. Because these people who are free from desires, anger & lust, are free from the bondage of this

world.

You are either busy in achieving something like money, fame or success or you are trying to come out of a situation which is not of your liking but you keep doing it because you 'have to'. In such situations you can't do anything else except getting immersed into it more & more.

But if you being a karm yogi, living in this materialistic world, can give up on your desires & hate, you are a true sanyasi.

जो किसी से ईर्ष्या नहीं करता अथवा जिसके मन में कोई कामना या वासना नहीं होती, ऐसे कर्मयोगी को संन्यासी समझना चाहिए। क्योंकि ये लोग जो इच्छा, क्रोध और वासना से मुक्त हैं, वे इस संसार के बंधन से मुक्त हैं।

आप या तो पैसा, प्रसिद्धि या सफलता जैसी कोई चीज़ हासिल करने में व्यस्त हैं या आप ऐसी स्थिति से बाहर निकलने की कोशिश कर रहे हैं जो आपकी पसंद की नहीं है लेकिन आप ऐसा करते रहते हैं क्योंकि आपको ऐसा करना ही होगा। ऐसी स्थिति में आप इसमें और अधिक डूबने के अलावा और कुछ नहीं कर सकते।

लेकिन यदि आप एक कर्मयोगी हैं, इस भौतिकवादी दुनिया में रहते हुए, अपनी इच्छाओं और नफरत को त्याग सकते हैं, तो आप एक सच्चे संन्यासी हैं।

साङ्ख्ययोगौ पृथग्बालाः प्रवदन्ति न पण्डिताः ।

एकमप्यास्थितः सम्यग्भयोर्विन्दते फलम् ॥ 4॥

Some people think that sanyas & karm yog gives you different fruits. Such people are ignorant because this is not true.

Both are very different paths whose destination is the same - The Absolute Truth, The Supreme, The God. Sanyasi is not the one who moves around in orange clothes. Real Sanyasi is the one who has won over his senses, his emotions. The one who remains equipoised in all the situations. There are many who wants to achieve HIM by being a Karm Yogi & that is absolutely ok. You have to choose your own path.

कुछ लोग सोचते हैं कि संन्यास और कर्म योग आपको अलग-अलग फल देते हैं। ऐसे लोग अज्ञानी हैं क्योंकि यह सत्य नहीं है।

दोनों बिल्कुल अलग-अलग रास्ते हैं जिनकी मंजिल एक ही है - परम सत्य, सर्वोच्च, ईश्वर। संन्यासी वह नहीं है जो भगवा वस्त्र पहनकर घूमता हो। असली संन्यासी वह है जिसने अपनी इंद्रियों, अपनी भावनाओं पर विजय प्राप्त कर ली है। जो हर स्थिति में समभाव रखता है। ऐसे कई लोग हैं जो कर्म योगी बनकर उन्हें प्राप्त करना चाहते हैं और यह बिल्कुल ठीक है। आपको अपना रास्ता खुद चुनना होगा।

यत्साङ्ख्यैः प्राप्यते स्थानं तद्योगैरपि गम्यते ।

एकं साङ्ख्यं च योगं च यः पश्यति स पश्यति ॥ 5॥

Sadgati, final destination - The Absolute Truth, can be achieved by both Gyan Yogi & Karm Yogi. That is why one should consider both Gyan & Karm yog equal. This is for those who keeps telling others that you should do bhakti 24x7. This is not correct. You need not leave your duties, your responsibilities or your

family & keep doing bhakti all the time. All you have to do is keep doing your karm without any desires.

सद्गति, अंतिम गंतव्य - परम सत्य, ज्ञान योगी और कर्म योगी दोनों द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। इसलिए ज्ञान और कर्म योग दोनों को समान समझना चाहिए। यह उन लोगों के लिए है जो दूसरों से कहते रहते हैं कि तुम्हें 24x7 भक्ति करनी चाहिए। यह सही नहीं है। आपको अपने कर्तव्यों, अपनी जिम्मेदारियों या अपने परिवार को छोड़कर हर समय भक्ति करते रहने की आवश्यकता नहीं है। आपको बस बिना किसी इच्छा के अपना कर्म करते रहना है।

संन्यासस्तु महाबाहो दुःखमाप्नुमयोगतः ।

योगयुक्तो मुनिर्ब्रह्म नचिरेणाधिगच्छति ॥ 6॥

Shri Krishna talks about the importance of Karm yog. Sanyas means if you take help of gyan yog along with karm yog, then only you will be able to come out of the complexities of this material world & know the real truth of life.

And if you want to know the truth, then you have to leave the ego that is 'I, ME, MYSELF'. And how to leave this ego? By controlling your senses & giving your 100% to your karm without any expectation of any kind of fruits. Do your karm & dedicate it to The Absolute Truth.

श्रीकृष्ण कर्मयोग की महत्ता बताते हैं। संन्यास का मतलब है कि यदि आप कर्म योग के साथ-साथ ज्ञान योग का सहारा लेंगे, तभी आप इस भौतिक संसार की जटिलताओं से बाहर आ पाएंगे और जीवन की वास्तविक सच्चाई को जान पाएंगे।

और यदि आप सत्य को जानना चाहते हैं, तो आपको 'मैं, मैं, मैं' का अहंकार छोड़ना होगा। और इस अहंकार को कैसे छोड़ें? अपनी इंद्रियों को नियंत्रित करके और किसी भी प्रकार के फल की अपेक्षा किए बिना अपने कर्म में अपना 100% देकर। अपना कर्म करो और इसे परम सत्य को समर्पित करो।

योगयुक्तो विशुद्धात्मा विजितात्मा जितेन्द्रियः ।

सर्वभूतात्मभूतात्मा कुर्वन्नपि न लिप्यते ॥ 7॥

River water kept in any vessel is still the water of that river. Similarly, we are also born from that Absolute, so our soul is nothing else but a very small part of the supreme himself. This is what we have to understand.

How?

By doing your karm but not getting attached to it, by controlling your senses & by being 100% pure.

Knowing your soul is the biggest truth that we need to know & this is how it is done.

किसी बर्तन में रखा हुआ नदी का जल आज भी उसी नदी का जल है। इसी प्रकार, हम भी उस पूर्ण से पैदा हुए हैं, इसलिए हमारी आत्मा और कुछ नहीं बल्कि स्वयं सर्वोच्च का एक बहुत छोटा सा हिस्सा है। यही हमें समझना होगा।

कैसे?

अपना कर्म करते हुए लेकिन उससे आसक्त न होते हुए, अपनी इंद्रियों को नियंत्रित करके और 100% शुद्ध रहकर।

अपनी आत्मा को जानना सबसे बड़ा सत्य है जिसे हमें जानना आवश्यक है और यह इसी प्रकार किया जाता है।

नैव किञ्चित्करोमीति युक्तो मन्येत तत्त्ववित् ।

पश्यज्शृण्वन्स्पृशज्जिघ्रन्श्ननाच्छन्स्वपञ्श्वसन् ॥ 8॥

प्रलपन्विसृजन्गृह्णन्नुन्मिषन्निमिषन्नपि ।

इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेषु वर्तन्त इति धारयन् ॥ 9॥

The one who has known the truth, the one who has acquired knowledge, such a yogi hears, speaks, eats, sleeps, sees, touches, smells, breaths, works – does everything what we all are also doing. The difference is that yogi knows that what ever he is doing is actually not done by him. There is someone else behind all this. He doesn't take pride in doing all this because he considered Bhagwan to be behind this. He dedicates all his karm to the absolute truth. On the other hand, we think we are the ones running our world & that is the biggest difference between a common man & a yogi.

जिसने सत्य को जान लिया है, जिसने ज्ञान प्राप्त कर लिया है, ऐसा योगी सुनता है, बोलता है, खाता है, सोता है, देखता है, छूता है, सूंघता है, सांस लेता है, काम करता है - वह सब कुछ करता है जो हम सब भी कर रहे हैं। अंतर यह है कि योगी जानता है कि वह जो कुछ भी कर रहा है वह वास्तव में उसके द्वारा नहीं किया जा रहा है। इस सबके पीछे कोई और है। उसे यह सब करने में गर्व नहीं होता क्योंकि वह इसके पीछे भगवान को मानता है। वह अपना सारा कर्म पूर्ण सत्य को समर्पित कर देता है। दूसरी ओर, हम सोचते हैं कि हम ही अपनी दुनिया चला रहे हैं और यही एक आम आदमी और एक योगी के बीच सबसे बड़ा अंतर है।

ब्रह्मण्याधाय कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा करोति यः ।

लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिवाम्भसा ॥ 10॥

Have you seen a lotus plant?

It grows in sludge (mud), whenever you drop water on its leaves, the water just flows out without wetting the leaves. It does not get affected by mud or water.

This is the sign of a wise, a gyani person. He stays in this world, performs all his duties & responsibilities but doesn't get bounded by it. You cannot run away from responsibilities. It is an act of cowardice to run away from your duties. We have to perform our duties & responsibilities without getting bounded by it.

क्या आपने कमल का पौधा देखा है?

यह कीचड़ में उगता है, जब भी आप इसकी पत्तियों पर पानी गिराते हैं तो पानी पत्तियों को गीला किए बिना ही बह जाता है। इस पर कीचड़ या पानी का असर नहीं होता है।

यही ज्ञानी व्यक्ति का लक्षण है। वह इस दुनिया में रहता है, अपने सभी कर्तव्यों और जिम्मेदारियों को निभाता है लेकिन इससे बंधता नहीं है। आप जिम्मेदारियों से भाग नहीं सकते. अपने कर्तव्यों से भागना कायरता का कार्य है। हमें इससे बंधे बिना अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों का पालन करना होगा।

कायेन मनसा बुद्ध्या केवलैरिन्द्रियैरपि ।

योगिनः कर्म कुर्वन्ति सङ्गं त्यक्त्वात्मशुद्धये ॥ 11॥

Who is karm yogi?

Yogi keeps doing karm through his body, mind & senses but he keeps offering it to God.

When we see it from outside, we feel that he is just as us. This is because he has family, commitments & duties similar to ours. But from within, he is at peace, unlike us. He is completely calm from within. Nothing of the outside world affects his internal peace. That is because he knows the relation between the soul & the supreme.

कर्म योगी कौन है?

योगी अपने शरीर, मन और इंद्रियों के माध्यम से कर्म करता रहता है लेकिन वह इसे भगवान को अर्पित करता रहता है।

जब हम उसे बाहर से देखते हैं तो हमें लगता है कि वह बिल्कुल हमारे जैसा ही है। ऐसा इसलिए है क्योंकि उसका परिवार, प्रतिबद्धताएं और कर्तव्य हमारे जैसे ही हैं। लेकिन भीतर से, वह हमारे विपरीत शांति में है। वह अंदर से बिल्कुल शांत हैं। बाहरी दुनिया की कोई भी चीज़ उसकी आंतरिक शांति को प्रभावित नहीं करती। ऐसा इसलिए है क्योंकि वह आत्मा और परमात्मा के बीच के संबंध को जानता है।

युक्तः कर्मफलं त्यक्त्वा शान्तिमाप्नोति नैष्ठिकीम् ।

अयुक्तः कामकारेण फले सक्तो निबध्यते ॥ 12॥

Karm yogi sacrifices the fruits of his karm & that is why he attains God. The one who is not Karm yogi, like most of us, we keep running after the results, the fruits of our karm & keep getting intertwined in the whirlpool of karm & can never come out of this cycle of karm. Both are doing karm, one has nothing to do with the results / fruits & the one has everything to do with the results / fruits.

कर्म योगी अपने कर्मों के फल का त्याग करता है और इसीलिए उसे ईश्वर की प्राप्ति होती है। जो कर्मयोगी नहीं है, हममें से अधिकांश की तरह, हम अपने कर्मों के फल के पीछे भागते रहते हैं और कर्म के भँवर में फँसते रहते हैं और कभी भी कर्म के इस चक्र से बाहर नहीं आ पाते हैं। दोनों कर्म कर रहे हैं, एक को परिणाम/फल से कोई लेना-देना नहीं है और एक को परिणाम/फल से ही लेना-देना है।

सर्वकर्माणि मनसा संन्यस्यास्ते सुखं वशी ।

नवद्वारे पुरे देही नैव कुर्वन्न कारयन् ॥ 13॥

Our body is the home with 9 doors. Eg: eyes, nose etc. These 9 doors helps us

deal with the world. None of the work is possible without these 9 doors. The yogi also has all these doors but he doesn't let these doors get him attached to the outside world because whatever karm he does, he keeps dedicating it to God. Whereas most of us, give in to these 9 doors & remain attached to this materialistic world.

हमारा शरीर 9 दरवाजों वाला घर है। जैसे: आंखें, नाक आदि। ये 9 दरवाजे हमें दुनिया से कम करने में मदद करते हैं। इन 9 द्वारों के बिना कोई भी कार्य संभव नहीं है। योगी के पास भी ये सभी दरवाजे होते हैं लेकिन वह इन दरवाजों को बाहरी दुनिया से जुड़ने नहीं देता क्योंकि वह जो भी कर्म करता है उसे भगवान को समर्पित करता रहता है। जबकि हममें से अधिकांश लोग इन 9 दरवाजों के आगे झुक जाते हैं और इस भौतिकवादी दुनिया से जुड़े रहते हैं।

न कर्तृत्वं न कर्माणि लोकस्य सृजति प्रभुः ।

न कर्मफलसंयोगं स्वभावस्तु प्रवर्तते ॥ 14॥

Man's nature, his prakriti plays an important role in defining his karm. One gets connected to certain things, certain karm & doesn't get attached to other is because of his prakriti. Your nature makes you do take certain actions & you get fruit according to the karm you have done. All this depends on your nature & your prakriti. You are solely responsible for your karm so don't put the blame on God when things don't go as per your wish.

मनुष्य का स्वभाव, उसकी प्रकृति उसके कर्म को परिभाषित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। कोई व्यक्ति कुछ चीजों, कुछ कर्मों से जुड़ जाता है और दूसरे से नहीं जुड़ पाता है, इसका कारण उसकी प्रकृति है। आपका स्वभाव आपसे कुछ कार्य करवाता है और आपके द्वारा किए गए कर्म के अनुसार आपको फल मिलता है। यह सब आपके स्वभाव और प्रकृति पर निर्भर करता है। आप अपने कर्म के लिए पूरी तरह से जिम्मेदार हैं इसलिए जब चीजें आपकी इच्छा के अनुसार नहीं होती हैं तो दोष भगवान पर न डालें।

नादत्ते कस्यचित्पापं न चैव सुकृतं विभुः ।

अज्ञानेनावृतं ज्ञानं तेन मुह्यन्ति जन्तवः ॥ 15॥

Everything is within us. It is just the matter of time before it comes in front of us. God never takes responsibility for your good or bad deeds. Your actions, your thoughts, your beliefs are yours to handle. All your karm is based on your nature, your prakriti. At times it ignorance wins over & you turn blind towards the knowledge that is being imparted to you, because of your nature. This defines whether you will commit sin or virtue.

सब कुछ हमारे भीतर है। बस हमारे सामने आने की देर है। ईश्वर कभी भी आपके अच्छे या बुरे कर्मों की जिम्मेदारी नहीं लेता। आपके कार्य, आपके विचार, आपकी मान्यताएं आपको ही संभालनी हैं। आपके सभी कर्म आपके स्वभाव, आपकी प्रकृति पर आधारित हैं। कभी-कभी अज्ञानता हावी हो जाती है और आप अपने स्वभाव के कारण उस ज्ञान के प्रति अंधे हो जाते हैं जो आपको दिया जा रहा है। यह परिभाषित करता है कि आप पाप करेंगे या पुण्य।

ज्ञानेन तु तदज्ञानं येषां नाशितमात्मनः ।
तेषामादित्यवज्ज्ञानं प्रकाशयति तत्परम् ॥ 16॥

Nothing is seen in darkness & a small ray of light makes everything visible. Same happens with the ultimate knowledge. The moment we realise whatever we are doing is because of the ultimate, the supreme, the God himself, all our ignorance gets washed away & we are filled with the light of knowledge. This brings the ultimate brightness in our lives. Our ignorance makes us think that we know everything & that stops us from knowing the ultimate. First of all, accept that you don't know anything. This will open up the doors to the ultimate knowledge, the ultimate light. This will lead us to the path of ultimate freedom.

अँधेरे में कुछ भी दिखाई नहीं देता और प्रकाश की एक छोटी सी किरण आते ही सब कुछ दिखाई देने लगता है। परम ज्ञान के साथ भी ऐसा ही होता है। जिस क्षण हमें एहसास होता है कि हम जो कुछ भी कर रहे हैं वह परम, सर्वोच्च, स्वयं ईश्वर के कारण है, हमारी सारी अज्ञानता दूर हो जाती है और हम ज्ञान के प्रकाश से भर जाते हैं।
इससे हमारे जीवन में परम प्रकाश आता है।
हमारी अज्ञानता हमें यह सोचने पर मजबूर कर देती है कि हम सब कुछ जानते हैं और यह हमें परम को जानने से रोकता है। सबसे पहले तो यह स्वीकार करें कि आप कुछ भी नहीं जानते। इससे परम ज्ञान, परम प्रकाश के द्वार खुल जायेंगे। यह हमें परम स्वतंत्रता के मार्ग पर ले जाएगा।

तद्बुद्धयस्तदात्मानस्तन्निष्ठास्तत्परायणाः ।
गच्छन्त्यपुनरावृत्तिं ज्ञाननिर्धूतकल्मषाः ॥ 17॥

This knowledge might seem boring at times. But no one can help you if you are not ready to open your mind to the ultimate knowledge.

Shri Krishna says that the ones who keep learning about the ultimate knowledge, the ones who keeps dedicating their karm to the God, the one who keeps God in each & everything that he does, is sure to be free from this cycle of birth & death and achieve the ultimate. Only a few can achieve it. Try to be one of them.

यह ज्ञान कभी-कभी उबाऊ लग सकता है। लेकिन अगर आप परम ज्ञान के लिए अपना दिमाग खोलने के लिए तैयार नहीं हैं तो कोई आपकी मदद नहीं कर सकता।

श्री कृष्ण कहते हैं कि जो लोग परम ज्ञान के बारे में सीखते रहते हैं, जो अपने कर्म भगवान को समर्पित करते रहते हैं, जो अपने हर काम में भगवान को रखते हैं, वे निश्चित रूप से जन्म और मृत्यु के इस चक्र से मुक्त हो जाते हैं। केवल कुछ ही इसे हासिल कर सकते हैं। उनमें से एक बनने का प्रयास करें।

विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि ।
शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः ॥ 18॥

The one who can see everything & everyone with equality is the true gyani. Knowledge helps us remove this difference because of which there is so much chaos within us & in the world. And that is why this knowledge of Gita is difficult for most to understand because we keep differentiating everyone based on their financial status, their professional status, their positions etc. Removing this difference seems impossible for ignorants because it is so normally intervened in our day to day lives.

जो हर चीज़ और हर किसी को समानता से देख सकता है वही सच्चा ज्ञानी है। ज्ञान हमें वह अंतर को दूर करने में मदद करता है जिसके कारण हमारे भीतर और दुनिया में इतनी अराजकता है। और यही कारण है कि गीता के इस ज्ञान को अधिकांश लोगों के लिए समझना कठिन है क्योंकि हम हर किसी को उनकी वित्तीय स्थिति, उनकी व्यावसायिक स्थिति, उनकी स्थिति आदि के आधार पर अलग-अलग करते रहते हैं। अज्ञानियों के लिए इस अंतर को दूर करना असंभव है।

इहैव तैर्जितः सर्गो येषां साम्ये स्थितं मनः ।

निर्दोषं हि समं ब्रह्म तस्माद् ब्रह्मणि ते स्थिताः ॥ 19॥

Shri krishna says - the one who becomes equipoised has won the world. This materialistic world in which live considers lots of money, big house, big cars etc as wins, as success.

According to God, the winner is the one who has won over his mind, his intellect. The one who sees everyone & everything with an equipoised view. What is the use of the money which creates differences between beings in your mind? Becoming equipoised is the state of Brahm & one should aim to achieve it.

श्रीकृष्ण कहते हैं- जिसने समत्व प्राप्त कर लिया, उसने संसार जीत लिया। यह भौतिकवादी दुनिया में ढेर सारा पैसा, बड़ा घर, बड़ी कारें आदि को जीत, सफलता माना जाता है।

भगवान के अनुसार विजेता वही है जिसने अपने मन, अपनी बुद्धि पर विजय प्राप्त कर ली है। वह जो हर किसी को समदृष्टि से देखता है। उस पैसे का क्या फायदा जो आपके मन में जीवों के बीच मतभेद पैदा करता है? समचित्त होना ब्रह्म की स्थिति है और व्यक्ति को इसे प्राप्त करने का लक्ष्य रखना चाहिए।

न प्रहृष्येत्प्रियं प्राप्य नोद्विजेत्प्राप्य चाप्रियम् ।

स्थिरबुद्धिरसम्मूढो ब्रह्मविद् ब्रह्मणि स्थितः ॥ 20॥

The one who doesn't get affected by good or bad happening in his life is called equipoised. Euqipoised means balanced. During challenging situations, if the intellect is balanced, the decision taken is correct. But on the other hand if the intellect keeps wandering, the person will be confused & decision will be wrong. Equipoised person is without confusion & doubts & that is when person can take firm & clear decision.

जिसके जीवन में घटित होने वाले अच्छे या बुरे का प्रभाव किसी पर नहीं पड़ता, वह समदर्शी कहलाता है। समदर्शी का अर्थ है संतुलित। चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में यदि बुद्धि संतुलित हो तो लिया गया निर्णय सही

होता है। लेकिन दूसरी ओर यदि बुद्धि भटकती रहेगी तो व्यक्ति भ्रमित हो जाएगा और निर्णय गलत हो जाएगा। संतुलित व्यक्ति भ्रम और संदेह से रहित होता है और तभी व्यक्ति दृढ़ और स्पष्ट निर्णय ले सकता है।

बाह्यस्पर्शेष्वसक्तात्मा विन्दत्यात्मनि यत्सुखम् ।

स ब्रह्मयोगयुक्तात्मा सुखमक्षयमश्नुते ॥ 21॥

All the materialistic pleasures like clothes, jewellery, food, cars, etc gives us immense happiness & pleasure. And that is why we keep running after these things. But we all know this happiness is short lived as it is going to end one day or the other. But what if someone tells you there is something beyond these materialistic happiness that will keep you in the state of bliss forever ? Yes, there is something very powerful within us that keeps us in the forever state of bliss but for that one needs to look inwards. For most of us dwelling in this materialistic world it is very difficult to even think about going inwards. The one who achieves it, gets the ultimate knowledge & is a true Yogi.

कपड़े, आभूषण, भोजन, कार आदि जैसे सभी भौतिक सुख हमें अत्यधिक खुशी और आनंद देते हैं। और इसीलिए हम इन चीज़ों के पीछे भागते रहते हैं। लेकिन हम सभी जानते हैं कि यह खुशी अल्पकालिक है क्योंकि यह एक न एक दिन खत्म हो जाएगी। लेकिन क्या होगा अगर कोई आपसे कहे कि इन भौतिक सुखों से परे भी कुछ है जो आपको हमेशा आनंद की स्थिति में रखेगा? हां, हमारे भीतर कुछ बहुत शक्तिशाली है जो हमें हमेशा आनंद की स्थिति में रखता है लेकिन इसके लिए व्यक्ति को अंदर देखने की जरूरत है। इस भौतिकवादी दुनिया में रहने वाले हममें से अधिकांश लोगों के लिए अंदर जाने के बारे में सोचना भी बहुत मुश्किल है। जो इसे प्राप्त कर लेता है, उसे परम ज्ञान प्राप्त हो जाता है और वही सच्चा योगी होता है।

ये हि संस्पर्शजा भोगा दुःखयोनय एव ते ।

आद्यन्तवन्तः कौन्तेय न तेषु रमते बुधः ॥ 22॥

We think that our senses gives us all the happiness & pleasures of life. But we are very wrong. Shri Krishna tells that these senses are not reason for all your happiness, but they are the reason for all your sadness. Because these so called pleasure are short lived. Once the pleasure from that sense is over, we go into the state of sadness. That's why the learned, the Yogi don't fall in the trap of senses.

हम सोचते हैं कि हमारी इंद्रियाँ हमें जीवन की सभी खुशियाँ और आनंद देती हैं। लेकिन हम बहुत गलत हैं। श्री कृष्ण बताते हैं कि ये इंद्रियाँ आपके सभी सुखों का कारण नहीं हैं, बल्कि ये आपके सभी दुखों का कारण हैं। क्योंकि ये तथाकथित सुख अल्पकालिक होते हैं। एक बार जब उस इंद्रिय से आनंद समाप्त हो जाता है, तो हम दुःख की स्थिति में चले जाते हैं। इसीलिए विद्वान और योगी इंद्रियों के जाल में नहीं फँसते।

शक्नोतीहैव यः सोढुं प्राक्शरीरविमोक्षणात् ।

कामक्रोधोद्वेगं वेगं स युक्तः स सुखी नरः ॥ 23॥

If we are capable of controlling our senses & our emotions before our death, then we are Yogi. We have limited time on this earth as human. After death, who knows which yoni we will be getting for our next birth. Therefore, in this human birth, if we can come out of the senses & focus on the ultimate goal - The Absolute Truth, we can come out of this cycle of birth & death.

यदि हम अपनी मृत्यु से पहले अपनी इंद्रियों और भावनाओं को नियंत्रित करने में सक्षम हैं, तो हम योगी हैं। मानव के रूप में इस धरती पर हमारे पास सीमित समय है। मृत्यु के बाद कौन जानता है कि हमें अगला जन्म कौन सी योनि मिलेगी। इसलिए, इस मानव जन्म में, यदि हम इंद्रियों से बाहर आ सकते हैं और अंतिम लक्ष्य - परम सत्य - पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं, तो हम जन्म और मृत्यु के इस चक्र से बाहर आ सकते हैं।

योऽन्तःसुखोऽन्तरारामस्तथान्तर्ज्योतिरेव यः ।

स योगी ब्रह्मनिर्वाणं ब्रह्मभूतोऽधिगच्छति ॥ 24॥

The one who leaves pleasures of this materialistic world & moves inwards. The one who understands the truth of the soul, is the true yogi. Others, the ones who are busy enjoying this materialistic world, just exist.

This doesn't mean, you leave everything & take sanyas. One has to work, one has to do his karm while focusing on the true goal, the ultimate purpose.

जो इस भौतिक संसार के सुखों को छोड़कर अंदर की ओर बढ़ता है, जो आत्मा के सत्य को समझता है, वही सच्चा योगी है। दूसरे लोग, जो इस भौतिकवादी दुनिया का आनंद लेने में व्यस्त हैं, वह बस ज़िंदा है उनके अस्तित्व का कोई मतलब नहीं है।

इसका मतलब यह नहीं है कि आप सब कुछ छोड़ कर संन्यास ले लें। व्यक्ति को सच्चे लक्ष्य, अंतिम उद्देश्य पर ध्यान केंद्रित करते हुए काम करना होगा, अपना कर्म करना होगा।

लभन्ते ब्रह्मनिर्वाणमृषयः क्षीणकल्मषाः ।

छिन्नद्वैधा यतात्मानः सर्वभूतहिते रताः ॥ 25॥

The one whose all sins are washed, the one who is free from all the doubts & confusions, the one who is working for other beings, the one who is focused on his ultimate goal even while doing his karm, such a person attains Brahm.

Greed never gives you peace, peace is in satisfaction. Real bliss is not in the external world, it is within you, it is in helping others.

जिसके सभी पाप धुल गए हैं, जो सभी संदेहों और भ्रमों से मुक्त है, जो अन्य जीवों के लिए काम कर रहा है, जो अपने कर्म करते हुए भी अपने अंतिम लक्ष्य पर केंद्रित है, ऐसा व्यक्ति ब्रह्म को प्राप्त करता है।

लालच कभी भी शांति नहीं देता, शांति संतुष्टि में है। असली आनंद बाहरी दुनिया में नहीं है, वह आपके भीतर है, वह दूसरों की मदद करने में है।

कामक्रोधवियुक्तानां यतीनां यतचेतसाम् ।

अभितो ब्रह्मनिर्वाणं वर्तते विदितात्मनाम् ॥ 26॥

True knowledge begins by controlling you mind. And one can control ones mind by controlling the emotions. When things don't go your way, you become angry & when you achieve success, you become extremely happy. We are always at the extremes. These extremes needs to be controlled. These emotions are controlled only when we become aware about it & decide that we want to control it. The day this awareness comes, is the day you have taken first step towards your ultimate goal.

सच्चा ज्ञान आपके मन को नियंत्रित करने से शुरू होता है। और भावनाओं पर नियंत्रण करके व्यक्ति अपने मन को नियंत्रित कर सकता है। जब चीजें आपके अनुरूप नहीं होतीं, तो आप क्रोधित हो जाते हैं और जब आपको सफलता मिलती है, तो आप बेहद खुश हो जाते हैं। हम हमेशा चरम पर होते हैं। इन चरम सीमाओं को नियंत्रित करने की आवश्यकता है। ये भावनाएँ तभी नियंत्रित होती हैं जब हम इसके बारे में जागरूक होते हैं और निर्णय लेते हैं कि हम इसे नियंत्रित करना चाहते हैं। जिस दिन यह जागरूकता आ जाती है, उसी दिन आपने अपने अंतिम लक्ष्य की ओर पहला कदम बढ़ा दिया है।

स्पर्शान्कृत्वा बहिर्बाह्यांश्चक्षुश्चैवान्तरे भ्रुवोः ।

प्राणापानौ समौ कृत्वा नासाभ्यन्तरचारिणौ ॥ 27॥

यतेन्द्रियमनोबुद्धिर्मुनिर्मोक्षपरायणः ।

विगतेच्छाभयक्रोधो यः सदा मुक्त एव सः ॥ 28॥

Forget the worldly things, leave the pleasures, sit in a quiet place, close your eyes, bring your focus in between the two eyebrows & concentrate on your breath - this is Pranayam. This is the first step to meditation. It helps to control your senses. Till the time you are alive your breath will continue. But becoming aware about it & controlling it, helps you control your senses. You will be able to come out of desires & you will get freedom.

सांसारिक चीजों को भूल जाओ, सुखों को त्याग दो, एक शांत जगह पर बैठ जाओ, अपनी आंखें बंद कर लो, अपना ध्यान दोनों भौंहों के बीच में लाओ और अपनी सांसों पर ध्यान केंद्रित करो - यही प्राणायाम है। यह ध्यान की ओर पहला कदम है। यह आपकी इंद्रियों को नियंत्रित करने में मदद करता है। जब तक आप जीवित हैं तब तक आपकी सांसें चलती रहेंगी। लेकिन इसके बारे में जागरूक होने और इसे नियंत्रित करने से आपको अपनी इंद्रियों को नियंत्रित करने में मदद मिलती है। आप इच्छाओं से बाहर आ सकेंगे और आपको मुक्ति मिलेगी।

भोक्तारं यज्ञतपसां सर्वलोकमहेश्वरम् ।

सुहृदं सर्वभूतानां ज्ञात्वा मां शान्तिमृच्छति ॥ 29॥

The one who follows what is taught by Shri Krishna, the one who follows righteousness, the one who doesn't refrain from his karm, is sure to attain his ultimate goal - The Absolute Truth. Shri Krishna is The Absolute Truth. And that truth is Peace.

This is the end of Adhyay 5.

In this chapter Shri Krishna cleared Arjun's doubt about Sanyas yog & Karm yog. He said both these Yog takes you to the ultimate goal. But Karm Yog is special because it requires power to live in this materialistic world, without getting attached to it & still fulfilling all our duties & responsibilities.

जो श्री कृष्ण द्वारा सिखाई गई बातों का पालन करता है, जो धर्म का पालन करता है, जो अपने कर्मों से विमुख नहीं होता है, वह निश्चित रूप से अपने परम मोक्ष - परम सत्य को प्राप्त करता है। श्री कृष्ण परम सत्य हैं। और वह सत्य है शांति.

यह अध्याय 5 का अंत है.

इस अध्याय में श्रीकृष्ण ने संन्यास योग और कर्म योग के बारे में अर्जुन के संदेह को दूर किया। उन्होंने कहा कि ये दोनों योग आपको परम लक्ष्य तक ले जाते हैं। लेकिन कर्म योग विशेष है क्योंकि इसमें इस भौतिकवादी दुनिया में रहने के लिए, इससे जुड़े बिना और अपने सभी कर्तव्यों और जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिए शक्ति की आवश्यकता होती है।